Quadrant II – Transcript and Related Materials

Programme: Bachelor of Arts (First Year)

Subject: Hindi

Paper Code: HNC- 106

Paper Title: भारतीय काव्यशास्त्र

Module Name: शब्दशक्तियां -II

Module No: 10

Name of the Presenter: Dr. Ranjita Parab, Asst. Professor.

Transcript:-

Notes : व्यंजना शब्दशक्ति :

जब किसी शब्द का अभिप्रेत अर्थ न तो मुख्यार्थ से होता है, और न ही लक्ष्यार्थ से, अपितु कथन के संदर्भ के अनुसार अलग –अलग अर्थ से या व्यंग्यार्थ से प्रकट होता है वहाँ व्यंजना शब्दशक्ति होती है।

- यहा प्रसंग के आधार पर अर्थ का स्वरूप तय होता है।
- व्यंजना का अर्थ है, विशेष प्रकार का अंजन, अंजन जो आखों को निर्मल करता है।
- व्यंजना शब्दों के वाच्यार्थ और लक्ष्यार्थ से हटकर उसमें निहित अकथित व्यंग्यार्थ को सूचित करता है।
जैसे -: 'सात बज गये'।
'बारिश का मौसम शुरू हुआ'।

● व्यंजना के भेद :

1. शाब्दी व्यंजना : जहाँ शब्द विशेष के कारण व्यंग्यार्थ का बोध होता है और वह शब्द हटा देने पर व्यंग्यार्थ समाप्त हो जाता है, वहाँ शाब्दी व्यंजना होती है।

- उदा. 'को तुम हो इत आँ कहां
घनश्याम हो तो कितहू बरसों' ।
- **आर्थी व्यंजना** : जब व्यंजना किसी शब्द विशेष पर आधारित न होकर अर्थ पर आधारित होती है , तो वहाँ आर्थी व्यंजना होती है ।
  - अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी
आँचल में दूध और आखों में पानी ।
- भाषा की आधारभूत शक्ति जो है वह अभिधा है, लेकिन काव्य का प्रयोजन सिर्फ अर्थ बोध कराना ही नहीं बल्कि हृदय के भावों की अनुभूति कराना भी है। और व्यंजना से काव्य में ध्वनित होनेवाले गर्भित अर्थ से भी हम परिचित होते हैं ।

व्यंजना

जब शब्द का मुख्यार्थ या लक्ष्यार्थ दोनों ही बाधित हो कर किसी अन्य अर्थ को ध्वनित करते हैं। तो वह ध्वन्यार्थ व्यंजना कहलाता है। व्यंजना शब्द और अर्थ दोनों में ही निहित रहती है। जैसे हम किसी व्यक्ति के पूछे कि अमुक स्त्री से तुम्हारा क्या संबंध है ? और वह कहे कुछ नहीं लेकिन उसका कहने का तरीका उसकी चितवन उसका मुस्कुराना आदि स्पष्ट कर देता है कि उसके संबंधों में आत्मीयता और प्रेम निहित है। कथन में आत्मीयता और प्रेम का ध्वनि तो होना ही व्यंजना शब्द शक्ति है। यह शब्द व्यंजना और आर्थी व्यंजना दो प्रकार की होती है। यहां संक्षिप्त विवरण केवल शब्द की प्रवृत्तियों या उसकी शक्तियों को प्राथमिक दृष्टि से समझना मात्र था।

साहित्य में रस और ध्वनियों की प्रासंगिकता गद्य और पद्य दोनों में ही होती है लेकिन कविता में इन दोनों के अतिरिक्त अलंकार छंद और भीम का प्रयोग उसमें विशिष्ट लाता है ।